
Rashtradhvajagam

राष्ट्रध्वजगलितम्

Document Information

Text title : Rashtradhvajagam

File name : rAShTradhvajagam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashttagitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 31, 2020

sanskritdocuments.org

Rashtradhvajagitam

राष्ट्रध्वजगीतम्



(गीतिका) (मात्रासमक जाति)

जयति त्रिवर्णौ गुणगणपूवौ

जगति समिद्ध सुषमाऽऽकीर्णम् ।

स्नेह-सौम्य-रस गौरव-मानं

धृति-मति शक्ति-सुधौघ-निधानम् ॥ जयति० ॥

विश्व शान्ति छित-कृत सन्देश

भ्रातृभाव समतैक निदेशम् ।

यारु यरित कृत-जन-सन्तोषं

आधि-व्याधि भय-शोषण शोषम् ॥ जयति० ॥

वीर केतुरयमुच्छ्रिन-दण्ड

शौर्य प्रधर्षित रिपु दल पाण्ड ।

शत्रु सैन्य दलनेन प्रयाण्ड

कान्तिकारि यरितामृत यण्ड ॥ जयति० ॥

ध्वजमिममुन्नय, मातरमर्यय,

अञ्जय देशछितार्षित-जुवम् ।

भञ्जय शत्रु, रञ्जय मित्र

मण्डय देश, पाण्डय द्वेषम् ॥ जयति० ॥

कैसर श्वेत-छरित-गुणपूवौ

वर्णैर्भ्राजित-रुचिर-सुशोभम् ।

कैसर-वर्णित त्याग-तपोभव

शौर्य वैर्य-गरिमोअय-पूर्णाम् ॥ जयति० ॥

श्वेत-वर्ण-धृत-शम-सन्तोष

सत्य-अछिंसा-शान्ति-गुणौघम् ।

छरित-वर्ण-श्रित-वैभव भावं

उन्नति-प्रगति विकास गुणाढ्यम् ॥ जयति० ॥

धर्म-चक्र-संसूचित धर्म

धर्म-नय धर्मापित देडम् ।

प्रगति-सूचक चक्रमिदं ते

सूर्य-चक्रमिव ङास विकासम् ॥ जयति० ॥

लोक-छिताय जगद्धित छैतो

भ्रातृभाव समता-सुख-छेतो ।

प्रगति विकास-समुन्नति-छेतो

विलसेद् राष्ट्रध्वज सुख सेतु ॥ जयति० ॥

छान्तिकारिभिर्जुवन-दानैः

शान्ति-पथैः सर्वस्व प्रदानैः ।

वीर धीर-जन-जुवन त्यागैः,

अर्थितमेतत् प्रतिपल रम्यम् ॥ जयति० ॥

छान्ति शौर्य धृति-जुवन-दान

शिक्षय लोक, शोषय शोकम् ।

षष्टि-कोटि-जय-नाद-समुत्थम् ।

विडरेद् विलसेद् गौरव-पूर्णम् ॥ जयति० ॥

Proofread by Mandar Mali



Rashtradhvajagam

pdf was typeset on May 31, 2020



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

